Dr. Ranjeet Kumar

History department

Jain college, ara

Notes for B. A part 3,paper 5

Topic:–बलबन का राजत्व सिद्धांत।

बलबन दिल्ली का प्रथम सुलतान था, जिसने राजत्व-संबंधी सिद्धांतों की स्थापना की। वह भारत के प्राचीन शासकों की ही तरह राजत्व के दैवी सिद्धांत में विश्वास रखता था। इसके द्वारा वह सुलतान की सर्वोच्चता स्थापित करना चाहता था। उसके राजत्व-सिद्धांत का स्वरूप फारस के राजत्व-संबंधी सिद्धांतों से प्रभावित था। बलबन सुलतान को पृथ्वी पर अल्लाह का प्रतिनिधि-नियाबते-खुदाई मानता था। उसके अनुसार, सुलतान का स्थान पैगंबर के पश्चात आता है। सुलतान जिल्ले अल्लाह, अर्थात ईश्वर का प्रतिबिंब है। वह अल्लाह के निर्देशानुसार ही शासन करता है। बलबन यह भी मानता था कि "राजा का हृदय ईश्वर-कृपा का विशेष कोष है और समस्त मनुष्य जाति में उसके समान कोई नहीं है। राजत्व निरंकुशता का शारीरिक रूप है। इस प्रकार की निरंकुशता सुलतान की हत्या का खतरा उत्पन्न करती थी। अतः, उसे अपनी सुरक्षा के प्रति सावधान रहना चाहिए और जनता में अपने प्रति भय की भावना जागरित करनी चाहिए।" उसने अपने पुत्रों को भी इस बात की शिक्षा दी कि वे राजत्व के उच्च आदशों के अनुसार ही शासन करें, अपने व्यक्तिगत चरित्र को आदर्शमय बनाएँ, जिसका अनुकरण अन्य व्यक्ति कर सकें। राजा के उत्तरदायित्वों और कर्तव्यों की भी उसने एक रूपरेखा तैयार की। उसका एकमात्र उद्देश्य सुलतान के पद की गरिमा एवं उसकी शक्ति को सुरक्षित बनाए रखना था। बलबन ने राजत्य का दैवी सिद्धांत क्यों अपनाया, इस संबंध में विभिन्न मत दिए गए हैं। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि जिस समय बलबन गद्दी पर बैठा, उस समय सुलतान की प्रतिष्ठा नष्ट हो चुकी थी। इल्तुतमिश के अनेक उत्तराधिकारी सुलतान तुर्की अमीरों के षड्यंत्र का शिकार होकर अपने प्राण गंवा चुके थे। ऐसी परिस्थिति में सैनिक और असैनिक शक्तियों से युक्त एक शक्तिशाली शासक की आवश्यकता थी, जो विभिन्न अभिजात वर्गों को संगठित रख सके और कानून-व्यवस्था पर नियंत्रण स्थापित कर सके। यह कार्य वहीं सुलतान कर सकता था जिसका सबों पर भय हो और सभी उसका सम्मान करे। राजाव की नई व्याख्या से इन आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती। हबीब और निजामी की मान्यता है कि बलबन ने सुलतान को उच्च पद पर प्रतिष्ठित करने का जो प्रयास किया वह उसकी मात्र हीन भावना एवं अपराध बोध का परिचायक है। उनके शब्दों में, "इन निरंतर उपदेशों के पीछे उसकी हीन भावना एवं अपराध भाव की जटिल प्रक्रिया का आभास किया जा सकता है। अपने मालिकों और अमीरों के जिनमें अधिकांश उसके सहचर थे, कानों में निरंतर चिल्ला-चिल्लाकर यह कहने से कि राजत्व एक दैवी संस्था है, उसका यह उद्देश्य था कि राज्यहंता का जो कलंक उसके माथे पर लगा था, उसे धो डाले और उनके मन में यह विचार भली-भाँति बिठा दे कि वह दैवेच्छा से ही सिंहासनारूढ़ हुआ है न कि किसी हत्यारे के विष भरे

प्याले या कटार से।" डॉ हबीबुल्ला का मत इससे भिन्न हैं। उनका मानना है कि बलबन ने गद्दी पर अपने वैध अधिकार के अभाव की कमी को पूरा करने के लिए राजत्व का दर्शन दिया। इसके साथ-साथ यह भी संभव है कि बलबन चूंकि दासता से मुक्त नहीं किया गया था इसलिए बह कानूनी तौर पर सुलतान के पद के अयोग्य था। अतः जनता, अमीर और कानून की नजरों में अपनी स्थिति सुदृढ़ करने के लिए उसने दैवी राजतंत्र का आडंबर किया। कारण जो भी हो, इतना तो निश्चित है कि बलबन ने अपने राजत्व के सिद्धांत के आधार पर सुलतान के पद की गरिमा को एक नए धरातल पर स्थापित किया।